मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 3

BSKS-191

स्नातक उपाधि कार्यक्रम (संस्कृत)

(बी. ए. जी.)

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर, 2024

बी.एस.के.एस.-191 : भारतीय वास्तुकला प्रणाली

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *(i) इस प्रश्न-पत्र में तीन खण्ड हैं।*

(ii) तीनों खण्ड अनिवार्य हैं।

खण्ड—क

1. अधोलिखित श्लोकों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए : 3×15=45

(i) परगेहकृताः सर्वाः श्रौतस्मार्तक्रियाः शुभाः।

निष्फलाः स्युर्यतस्तासां भूमीशः फलमश्नुते॥

अथवा

जलान्तं प्रस्तरान्तं वा पुरुषान्तमथापि वा।

क्षेत्रं संशोध्य वोद्धृत्य शल्यं सदनमारभेत्॥

(ii) पूर्वादिदिक्शिरा वामपार्श्वशायी प्रदक्षिणम्।
नरवास्तुश्चरत्येष पूजनीयो गृहाधिपैः॥

अथवा

गृहेषु हस्तमानं स्यात्स्वामिहस्तप्रमाणतः।
देवादीनान्तु धिष्णेषु कर्महस्तेन केवलम्॥

(iii) सम्पाता वंशानां मध्यानि समानि यानि च पदानाम्।
तानि मर्माणि विद्यान्न तानि परिपीडयेत् प्राज्ञः॥

अथवा

एकभित्तिषु सम्बद्धं कारयेद् यो गृहद्वयम्।
यमतुल्यं गृहं तत्तु कर्तुः स्यान्निधनप्रदम्॥

खण्ड—ख

नोट : *निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं* ***तीन*** *के उत्तर दीजिए।* 10×3=30

1. 'वास्तुसौख्यम्' ग्रन्थ की विषय-वस्तु का वर्णन कीजिए।

2. प्रश्नाक्षर के द्वारा भूमि में शल्य का ज्ञान किस प्रकार किया जाता है ? विवेचन कीजिए।

3. 'वास्तुसौख्यम्' ग्रन्थ के अनुसार स्तम्भ प्रमाण के विषय में प्रकाश डालिए।

4. द्वारवेध का स्पष्ट विवेचन कीजिए।

खण्ड—ग

नोट : *निम्नलिखित में से किन्हीं* ***पाँच*** *पर पर टिप्पणियाँ लिखिए :* 5×5=25

1. कलश चक्र विचार
2. वीथिका प्रमाण
3. द्विशालगृह
4. चतुष्षष्टिपदवास्तुमण्डल
5. ब्राह्मणादिवर्णचतुष्ट्य-गृहप्रमाण
6. वास्तु प्रयोजन

× × × × × × ×